



Ambedkar's love marriage



'An intimate, vivid, first-hand account . . .
an invaluable primary source'

RAMACHANDRA GUHA



BABASAHEB

My Life with
Dr Ambedkar

SAVITA AMBEDKAR

Translated from the Marathi by NADEEM KHAN



Contemporary source



सन 1946 के समय ये वो दौर था जब अंबेडकर संविधान सभा को एक सत्य मान चुके थे इससे पहले उन्होंने संविधान सभा का उतना विरोध किया जितना की जा सकता था इसी समय में अंबेडकर काफ़ी बीमार हो गए थे और आना जाना कम कर दिया था

फिर भी एक बार वो dr rao से मिलने के लिए उनके घर आते है वहाँ वो शारदा कबीर से मिलते है

शारदा कबीर अम्बेडकर को खान पान और फलाहार के बारे में बता रही है होती है तभी अंबेडकर उनको बीच में ही रोक देते है और कहते है की मेरे घर पर कोई महिला नहीं रहती मैं अकेले रहता हूँ ये सारी बातें किसे बताऊंगा

यह सुनते ही शारदा कबीर काफ़ी भावुक हो जाती है और उनके अंदर का डॉक्टर जाग जाता है वह मन में सोचती है की एक ऐसा आदमी जिसे सहायता की ज़रूरत है फलाहार और चिकित्सा की ज़रूरत है यदि यह सब मिल गया तो उनकी आयु बढ़ जाएगी शारदा कबीर सोचती है की मुझे कुछ करना चाहिए



शारदा कबीर थोड़ी देर मन में सोचती है फिर कहती है की आपकी स्थिति काफ़ी नाजुक है मैं 2.3 दिन आपके साथ रह कर आपकी देख भाल करने कि लिए तयार हूँ अम्बेडकर काफ़ी हिचकिचाते है और कहते है की मैं घर में अकेला रहता हूँ यह कैसे संभव है यह वो दौर था जब अंबेडकर के लाखो मानने वाले थे पर उनके साथ कोई नहीं था

इसके बाद फिर मैं अंबेडकर से मिली जाते समय वो बोले की आइए मैं आपको आपके घर छोड़ देता हूँ इसके बाद में dr अंबेडकर के साथ घूमना फिरना उठना बैठना हो गया हमारा रिस्ता डॉक्टर और मैनरिज का था लोग मुझे उनके साथ बड़ी हैरानी बड़ी नज़रों से देखते थे अंबेडकर ने एक दिन मुझसे कहा की डॉक्टर मेरे लोग मुझसे कहते है मैं दूसरी शादी कर लू पर मुझे कुछ समझ नहीं आता

लेकिन मुझे मेरे लाखों लोगो के लिए जिंदा रहना है

इसके बाद अंबेडकर दिल्ली चले गए फिर एक उनका बड़ा लिफाफा मुझे मिला मुझे लगा की दवाइयों को लेके कोई बात होगी पर नहीं उसके उन्होंने लिखा था की मैं तुम्हारे साथ अपनी पत्नी का तलाश कर रहा हूँ हमारी उम्र का अंतर देखे हुए तुम चाहो यो बना भी कर सकती हो



शादी के प्रस्ताव से मेरे अंदर तूफ़ान चल रहा था मेरे दीमक में काफ़ी सवाल थे मैं सोच रही थी इतने बड़े आदमी को मना कैसे करूँ मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा था मैंने अपने भाई को पूरी बात बताई उन्होंने मुझे सलाह दिया की मुझे उनसे शादी कर लेनी चाहिए मैं जवान वा अनुभव हीन थी अंबेडकर की तुलना में मुझे कुछ भी नहीं आता था मेरे अंदर एक डॉक्टर भी था सब कुछ सोचने के बाद मैंने उनको शादी के लिए हा कर दिया

मुझे पता था की डॉक्टर अंबेडकर यह सुन कर बहोत खुस होंगे और वो हुए भी अगले हफते उन्होंने मुझे एक सोने की चेन दी

डॉ. अंबेडकर और मेरे बीच लगातार चिट्ठी-पत्री होती रहती थी। उन्होंने

16 फरवरी 1948 के मेरे खत का जवाब 19 तारीख को दिया, जिसमें उन्होंने लिखा:

मेरी प्यारी शारू,

मुझे आज दोपहर तुम्हारा 16 तारीख का खत मिला। उसे पढ़कर मुझे जो खुशी हुई, वह सच में बेहद थी—जैसा कि हम कहते हैं, अनंत। मैंने कहा था कि तुम पहली थीं जो शिकार हुईं। लेकिन तुमने बिल्कुल सही कहा कि मैंने अपनी भावनाओं को छिपाया था, हालांकि ज़्यादा कामयाबी से। क्योंकि मैं भी

शुरू से ही शिकार था। मुझे हैरानी है कि क्या दोनों तरफ से पहली नज़र के प्यार का ऐसा कोई और मामला है।

मुझे यकीन है कि हम दो शरीर होंगे जिनमें एक ही आत्मा होगी। मौत के अलावा कोई चीज़ हमें अलग नहीं कर सकती। मुझे अफ़सोस है कि मेरे खत ने तुम्हें रुला दिया। आंसू अच्छे होते हैं। वे सारी गंदगी धो देते हैं और दिल को साफ़ कर देते हैं।

अगर तुम रोई हो तो मेरा यकीन करो, मैं भी शायद रोया हूँ।

एक अलग कारण—यानी एक सपने का पूरा होना—एक ऐसी औरत को ढूँढना जिसमें गुण और बुद्धि दोनों हों, जो मेरी पत्नी बने—और उसके बाद जो खुशी मिली है। आइए हम एक-दूसरे को खुश करने का पक्का इरादा करें। मुझे खुशी है कि गुरुजी ने हमारे फैसले को आशीर्वाद दिया है...



इंसान को प्यार को भी कंट्रोल करना सीखना चाहिए। मुझे डर है कि तुम इसका शिकार हो गई हो। मुझे पता है कि तुम अब और जुदाई बर्दाश्त नहीं कर सकती। मैं भी अकेलेपन से थक गया हूँ। मैं तुम्हें अपने पास चाहता हूँ।

लेकिन प्लीज़ मुझे थोड़ा समय दो। मैं तुम्हें यकीन दिलाता हूँ, मैं तुम्हारे सब्र का इम्तिहान नहीं लूँगा... प्लीज़ नाराज़ मत होना। जब हमें बाकी ज़िंदगी साथ बितानी है, तो साथ आने से पहले थोड़ा समय गंवाना शिकायत की बात नहीं हो सकती।

...लेकिन मुझे यह जानकर बहुत दुख हुआ कि तुमने तीन दिनों से खाना नहीं खाया था। तुमने यह किसलिए किया? मुझे लगा था कि शारू एक समझदार लड़की है। मुझे उम्मीद है कि तुम ऐसा दोबारा नहीं करोगी। तुम मेरा खजाना हो और मैं नहीं चाहता कि तुम्हें शरीर या मन से कोई तकलीफ हो...

किस्मत के रास्ते कितने अजीब और रहस्यमय होते हैं!! कौन सोच सकता था कि मैं और तुम पति-पत्नी बनेंगे। अलग-अलग तबकों में पैदा हुए, अलग-अलग माहौल में रहे, अलग-अलग रास्तों पर चले, और यहाँ हम मरीज़ और नर्स के तौर पर मिल रहे हैं और फिर शादी के बंधन में बंध रहे हैं। इस रिश्ते को बनाने में किस्मत मुझ पर मेहरबान रही है।

...एक और रहस्यमय बात वह प्यारा नाम है जो तुमने मुझे दिया है। यह वही नाम था जिससे मेरे साथी छात्र मुझे एल्फिंस्टन हाई स्कूल में पढ़ते समय बुलाते थे। मैं सोच रहा हूँ कि तुम्हें यह नाम कैसे सूझा? तुम इसे इस्तेमाल कर सकती हो...

बहुत प्यार के साथ,

तुम्हारा – राजा।

उसके बाद अंबेडकर और सरदा कबीर के बीच कई पत्र व्यवहार हुए वो एक दूसरे के काफी करीब आ चुके थे इस ये 1948 का समय था इस समय अम्बेडकर की उम्र 60 साल और सरदा कबीर की लगभग 35 साल थी अंबेडकर शारदा कबीर को लिखे को पत्रों में काफी भावुक होते हुए दिखाई पड़ते हैं पत्रों में अंबेडकर का शारदा कबीर से प्रेम दिखाई पड़ता है मार्च 1948 में शादी का Date तय हो गया

उसके बाद 9-4-1948 को लिखे एक पत्र में अंबेडकर खुद को शारदा कबीर का गुलाम कहते ही यहाँ से हम यह समझ सकते हैं की अम्बेडकर कितने भावुक थे

अम्बेडकर 21 feb 1948 को
शारदा अंबेडकर को पत्र लिखते हैं की

शारू का लिखा खत उसके राजा को 2/3 दिन पहले मिल गया था। शारू के राजा ने उसका जवाब इंग्लिश में दिया है। यह पक्का है कि शारू जवाब मराठी में चाहेगी, इसलिए शारू का राजा यह मराठी खत लिख रहा है।

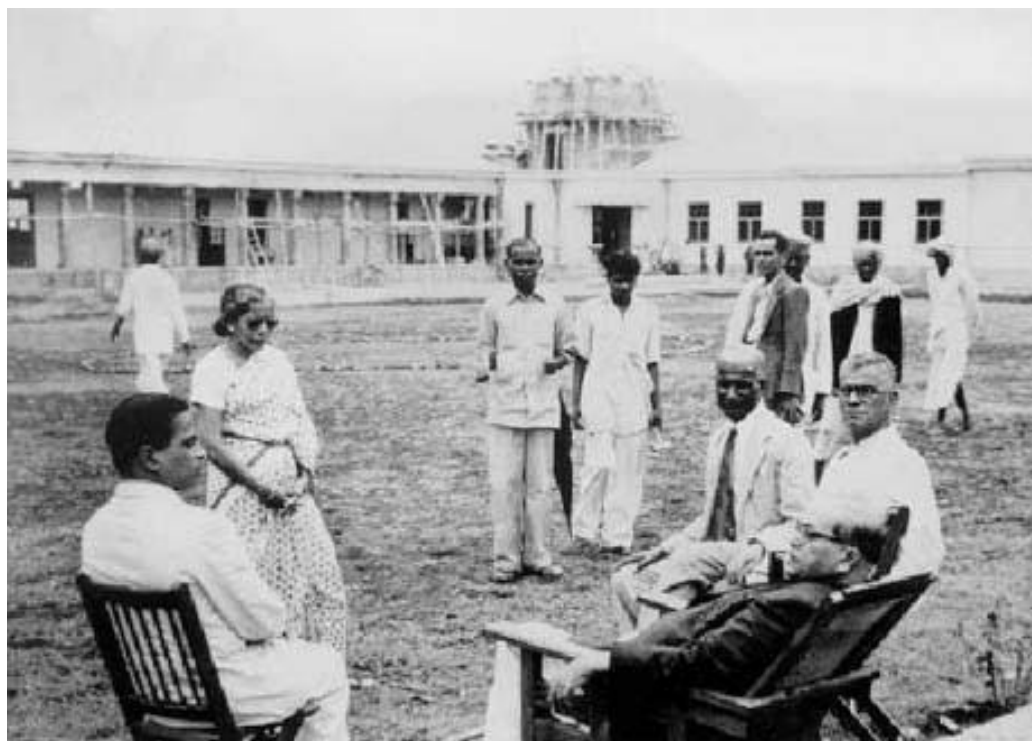
राजा की शारू, शारू का राजा बहुत ज़्यादा दुखी है कि शारू के राजा के खत में कुछ कड़े शब्दों से उसे दुख हुआ—उसने खाना-पीना छोड़ दिया, सोना छोड़ दिया। शारू के राजा को ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि उसके खत का इतना बुरा असर होगा। क्या उसे लगता है कि शारू का राजा जानबूझकर अपनी प्यारी शारू को दुख पहुँचा सकता है? शारू का राजा निश्चित रूप से ऐसा कठोर दिल और लापरवाह इंसान नहीं है। मराठी में एक कहावत है जिसका मतलब है 'पहले कड़वा, फिर मीठा', जो राजा की शारू को ज़रूर याद होगी। जब शारू राजा की हो जाएगी और राजा शारू का हो जाएगा, तो इस दुनिया की यात्रा के दौरान उनके बीच कोई दूरी नहीं आनी चाहिए और कोई गलतफहमी नहीं होनी चाहिए; बस इसी इरादे से

शारू के राजा ने शारू के सामने कुछ ऐसे सवाल रखे जो अप्रिय थे लेकिन सोचने लायक थे ।

जब शारू के राजा ने ऐसा किया तो उनका इरादा नेक था । इसे ध्यान में रखते हुए, शारू के राजा को उम्मीद है और विश्वास है कि राजा की शारू अपना दुख कम कर लेगी और अपने राजा को माफ़ कर देगी । शारू के राजा को पूरी तरह पता है कि शारू जुदाई का ज़रा सा भी दर्द बर्दाश्त नहीं करेगी । शारू के राजा ने अपने पिछले खत में शारू को भरोसा दिलाया था कि जुदाई की अवधि को कम से कम किया जाएगा...शारू ने अपने खत में ताना मारा है कि यह शारू के राजा का फैसला है कि शारू कानूनी तौर पर शादी किए बिना घर की दहलीज पार न करे, शारू का राजा दुनिया से नहीं डरता । अब 25 साल हो गए हैं कि वह पूरे हिंदुस्तान से लड़ रहा है । गांधी के सामने किसी की हिम्मत नहीं थी कि वह सीना तानकर खड़ा हो, लेकिन शारू का राजा उन्हें कड़े शब्दों से हमला करने से नहीं डरा और वह इस लड़ाई में जीतता रहा और लोगों का उसके प्रति सम्मान भी बढ़ा; राजा की शारू को यह मानना ही पड़ेगा । यह दुख के साथ कहना पड़ रहा है कि शारू ने इस बात पर पर्याप्त रूप से विचार नहीं किया कि यह जीत कैसे हासिल हुई और सम्मान क्यों बढ़ा । अगर उसने ऐसा किया होता,

तो राजा की शारू को खुद ही एहसास हो जाता कि उसका ताना गलत था । मेरी सफलता की कुंजी मेरे शुद्ध और नेक आचरण में है । चूंकि राजा की शारू ने इसका अनुभव नहीं किया है, इसलिए शायद उसे मेरी बात मानने में

मुश्किल हो, लेकिन शारू के राजा को यकीन है कि अनुभव उसे इस बात की सच्चाई मानने पर मजबूर कर देगा। दुनिया के साथ मेरे संघर्ष में मेरी भूमिका न्याय और नैतिकता की थी। कुछ आज़ादी पसंद लोग कहते हैं कि



जो मन करे वही करना चाहिए और लोगों की निंदा से नहीं डरना चाहिए। मैं इस सिद्धांत को स्वीकार नहीं कर सकता कि लोगों की निंदा से नहीं डरना चाहिए। सच्चाई, नैतिकता और अच्छे आचरण को आगे बढ़ाने के लिए काम करते समय लोगों की निंदा से नहीं डरना चाहिए, यह मैं स्वीकार करता हूँ। शारू के राजा को नहीं लगता कि उचित रीति-रिवाजों का पालन किए बिना अंतरंग होने में सच्चाई, नैतिकता और अच्छे आचरण का कोई मुद्दा शामिल है; इसलिए इस बात पर ज़ोर है कि हम रीति-रिवाज पूरे होने तक इंतज़ार करें। इसमें कोई शक नहीं कि राजा

की शारू इस स्थिति और इस सोच को स्वीकार करेगी।

शारू कहती है कि राजा उसका भगवान है; लेकिन यह भी उतना ही सच है कि शारू भी राजा का भगवान है और राजा को इसके लिए शारू को कोई सबूत देने की ज़रूरत नहीं है। शारू राजा की भक्त है और राजा शारू

का भक्त है। शारू राजा के अलावा किसी और भगवान को नहीं जानती और राजा शारू के अलावा किसी और भगवान को नहीं जानता। देखने में और शारीरिक ज़रूरतों में, वे अलग-अलग शरीर लगते हैं; लेकिन

राजा की शारू और शारू का राजा दोनों पक्का मानते हैं कि उनमें एक ही आत्मा रहती है। शारू और उसके राजा का मिलना कोई जानवरों जैसा संयोग नहीं बल्कि एक दैवीय संयोग है। अगर यह दैवीय संयोग नहीं होता, तो दूर गुजरात में रहने वाली शारू, और राजनीति के भंवर में फंसे उसके राजा से कैसे मिल पाती? लेकिन यह भी कहा जा सकता है कि

यह एक आत्माओं का मिलन है। एक आत्मा ने दूसरी आत्मा को देखा, दोनों ने एक जैसी पहचान पहचानी और एक-दूसरे को गले लगा लिया। क्या यह आलिंगन कभी टूटेगा? राजा को यकीन है कि मौत के अलावा कुछ भी इस आलिंगन को नहीं तोड़ सकता। राजा की यह बड़ी इच्छा है कि दोनों एक ही समय मरें। शारू के जाने के बाद राजा का ख्याल कौन रखेगा? इसलिए ऐसा लगता है कि राजा को पहले मरना चाहिए। लेकिन दूसरे नज़रिए से, जब राजा सोचता है कि राजा के गुज़र जाने के बाद शारू का क्या होगा, तो उसके मन को शांति नहीं मिलती।

जनसेवा में डूबे रहने के कारण राजा ने कोई धन-दौलत जमा नहीं की है। शारू का राजा भूख मिटाने के अलावा कुछ नहीं कर पाया है। शारू के राजा को कोई पेंशन नहीं मिलती। अगर शारू का राजा स्वस्थ होता, तो कोई समस्या नहीं होती; लेकिन उसकी खराब सेहत के कारण

शक पैदा होता है, और जब यह ख्याल आता है कि शारू का क्या होगा, तो दिल बेचैन हो जाता है। शारू का राजा मानता है कि भगवान बुद्ध इन सब से कोई रास्ता निकालेंगे। इस पत्र के साथ एक रजिस्टर्ड पार्सल भेजा जा रहा है। इसमें (1) अशोक स्तंभ की तस्वीर है।



यह तस्वीर हमारे द्वारा तैयार किए गए संविधान की किताब के कवर पेज पर छापी जाएगी। मैंने इसे चुना है। शारू को यह पसंद आएगा और उसे लगेगा कि राजा को भी खूबसूरती से प्यार है।

(2) इलस्ट्रेटेड वीकली से तीन तस्वीरें हैं जो अलग-अलग इलाकों के महिलाओं के कपड़ों को दिखाती हैं। मैंने सोचा कि अगर कभी शारू को सोने के कपड़े खरीदने का मन हुआ, तो ये तस्वीरें

उसे यह तय करने में मदद करेंगी कि वे कैसे होने चाहिए। राजा की राय में, मारवाड़ी ड्रेस



15 April 1948 को मरीज सेरेमनी का dete तय
किया जाता है जिसमे
सरदार बल्लभ भाई पटेल
जवाहर लाल नेहरू नवल भथेना
भदंत आनंद कौशल्यान



Team Rishi mantvya



Indiapac - X , Insta , YouTube

